चमचाय तस्मै नमः

माधव सोनटक्के

चमचाय तस्मै नमः

चमचाय तस्मै नमः

माधव सोनटक्के

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन

4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002

शाखा

अशोक राजपथ, पटना 800 004

फ़ोन : +91 11 23273167 फ़ैक्स : +91 11 23275710

www.vaniprakashan.in
vaniprakashan@gmail.com
sales@vaniprakashan.in

CHAMCHAY TASMEI NAMAH
by Madhav Sontakke

ISBN : 978-93-5072-848-2
Satire

© 2016 माधव सोनटक्के

प्रथम संस्करण

मूल्य : ₹ 250

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

हर्ष प्रिंटर्स, दिल्ली-110 093 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

अनुक्रम

चमचाय तस्मै नमः !	7
जनलोकपाल आ रहा है !	9
मीड़िया संस्कृति का करिश्माई आईना	11
मूर्ख बनने का मज़ा...	13
बेचारे सांसद	15
ओम गुण्डा पुरुष देवाय नमः !	18
आज मौसम बड़ा बेईमान है	21
मिशन बेडरूम बनाम संस्कृति बचाओ अभियान	23
जय हो !	25
हमें देखना है !	27
ओम टेलीविजनाय नमः	30
यहाँ सब कुछ बिकता है !	32
सच का सामना	34
एक और साल	36
जूताय तस्मै नमः	39
इहवादी और देहवादी संस्कृति	41
शिक्षा की मंड़ी	43
देशी की ऐसी तैसी	44
बेशर्मी में बरकत है	47
लाभ के पद और पदों के लाभ	49

अवसरवादी विमर्श 51
किराना ही होलसेल राजनीति 54
व्यावहारिक शोध प्रविधि एवं शोधतन्त्र 55
भाई लोगों की गाँधीगिरी 59
जानम समझा करो! 61
साठ साल की आजादी और अधेड़ राजभाषा 64
महँगाई का महँगा चिन्तन 66
फिर एक बार 69
महागुरु को अंग 72
नेता, जनता और जूता 75
हमारी आध्यात्मिक सम्पन्नता 78
घोटाला चिन्तन 81
गधे से साक्षात्कार 83
मैं कहाँ नहीं हूँ! 87
चम्मचें और काँटे 90
राष्ट्रीय एकात्मता, रॉकेल और राशन 93
बीसवीं सदी के एक प्रेमी की आत्मकथा 97
नया बिजनेस 101

चमचाय तस्मै नमः!

अभी कुछ दिन पहले समाचार छपा था कि अपराधी जेल की दीवार तोड़कर भाग गये। न हमें अपराधियों के भाग जाने का दुख हुआ और न जेल की दीवार के टूट जाने का। क्योंकि अपराधी जेल में हो या बाहर, न तो उनके लिए कोई फर्क पड़ता है और न हमारे लिए। वे जेल में सरकारी ऐशोआराम का लुफ्त लेते हुए अपने गुर्गों के द्वारा वे सब गतिविधियाँ सम्पन्न कराते हैं, जो बाहर रहकर उन्हें करनी होती हैं। उनका जेल की दीवार तोड़ना भी कोई बड़ी बात नहीं है। वैसे भी जेल की दीवारें उन्हीं की मेहरबानी पर खड़ी हैं। अन्यथा जेल हो या पुल, सड़क हो या भवन, सार्वजनिक निर्माण विभाग और ठेकेदारों के आपसी प्रेम से बनी हर चीज बड़ी आसानी से तोड़ी जा सकती है। क्योंकि टूटना उनकी नियति है। अपने निर्माण के दूसरे दिन से ही ये अपनी टूटने की दुआ करती हैं। हर पल इस आस में रहती है कि कोई आयेगा... मुझे तोड़ेगा और मुझे तथा मेरे निर्माताओं को मुक्ति दिलाएगा। अफसर, नेता और ठेकेदार कई-कई अनुष्ठान करते हैं कि फलाँ भवन गिर जाये, फलाँ सड़क बह जाये, फलाँ पुल ढह जाये...और एक दिन सब ढह जाता है। अफसर खुश होते हैं, नेता खुश होते हैं। इसीलिए ठेकेदार भी खुश होते हैं। अब हम भी खुश हो रहे हैं। हम सन्तों की भूमि में पैदा हुए हैं, हमें सिखाया गया है इस मृत्यु लोक में हर चीज नश्वर है, जो पैदा होता है, उसे मिट जाना है। निर्माण के साथ विनाश अटल रूप में जुड़ा है। मृत्यु अटल है। मृत्यु निश्चय है, जो भौतिक है, जो स्थूल है उसका नाश विधिलिखित है। ये भवन, ये सड़कें, ये पुल, ये जेल की दीवारें स्थूल हैं, उनका ढह जाना-बह जाना प्रकृति का नियम है। लेकिन याद रखिए, जो ढह गया, मिट गया वह स्थूल है, उसका सूक्ष्म अविनाशी-अनश्वर अगोचर आत्मा रूप फाइलों में सुरक्षित है, उसे न आग जला सकती है, न पानी बहा सकता है, न शस्त्र उसे काट सकते हैं। जैसे हम कपड़े बदलते हैं, वैसे आत्मा शरीर बदलती है। पहले हम कपड़े पुराने होने का इन्तजार करते थे, लेकिन आज उसकी जरूरत नहीं... हम पल-पल कपड़ें बदलते हैं, फिर आत्मा शरीर के जीर्ण होने की प्रतीक्षा क्यों करें? इसीलिए वह भी पल-पल शरीर बदल रही है। फाइलों में सुरक्षित आत्माएँ

भी किसी और अफसर और ठेकेदार के सहारे फिर-फिर नया शरीर धारण कर लेती हैं। 'जीवन-मरण' का यह खेल प्रभु और सरकार दोनों के घर की निरन्तर लीला है। हमें इस लीला को भक्ति भाव से देखना है। हम इसी के लिए बने हैं, इसीलिए न तो हम अपराधियों के भागने से दुखी हैं और न जेल की दीवार तोड़ने से। हमें लगा यह एक रुटीन समाचार है। लेकिन इस समाचार का उत्तरार्द्ध थोड़ा दिलचस्प था। कहा गया कि 'अपराधियों ने जेल की दीवार तोड़ने के लिए चमचों का हथियार के रूप में' प्रयोग किया। कुछ लोगों को यह बड़ी अचरज की बात लगी कि चमचे जैसी चीज यह भी कर सकती है? लेकिन हमें इसमें कोई अचरज नहीं हुआ। क्योंकि हम चमचों से और उनकी क्षमताओं से भली-भाँति परिचित हैं। चमचे क्या नहीं कर सकते? जेल की दीवार उनके लिए किस झाड़ की पत्ती है, वे तो सरकारें तोड़ सकते हैं, पूरा देश खा सकते हैं। राजा को रंक बना सकते हैं और रंक को राजा। 'चमचे' सुपर पावर होते हैं, परमाणु बम से भी वे अधिक ताकतवर होते हैं। इतिहास गवाह है, चाहे सिकन्दर हो, मुहम्मद गौरी हो, मुगल शाह बाबर हो या ईस्ट इंडिया कम्पनी हो, अपने चमचों के बल पर ही वीर जननी भारत को उन्होंने परास्त किया है। अंग्रेजों का राज डेढ़ सौ सालों तक देशी चमचों की बदौलत अबाधित रहा। इतना ही नहीं सन् 1947 से आज तक इस स्वतन्त्र जनतांत्रिक देश में जो भी हादसे हुए हैं, वे सब चमचों की ही करामात है। छेद करना, चाहे वह थाली में हो या संसद में, चमचों के बायें हाथ का खेल है। जहाँ भी छेद दिखाई दे, जहाँ भी कुछ ढह जाये, बह जाये, समझ लीजिए वहाँ चमचों का बसेरा है और अब छेद कहाँ नहीं है? स्कूल-कॉलेजों में, स्वायत्त शिक्षा संस्थानों में, देशी-विदेशी विश्वविद्यालयों में, नगर निगमों-महानिगमों में, कमीशनों-अनुबन्धों में, सरकारी महकमों-दफ्तरों में, मंत्रालयों-सचिवालयों में, मन्दिरों-गिरजाघरों में, हर दीवार में छेद नजर आ रहे हैं। अब क्या कहें? चमचाय तस्मै नमः!

जनलोकपाल आ रहा है!

सारा देश आज खुशी से झूम रहा है। भारत माता की जय! वन्दे मातरम्!! इन्किलाब जिन्दाबाद !!! आदि नारे देश के हर कोने में गूँजने लगे हैं। छोटे बच्चे से लेकर बड़े बुजुर्गों तक के सर पर गाँधी टोपी विराजमान हो गयी है। गाँधीजी के अहिंसात्मक आन्दोलन ने दूसरी आजादी के दरवाजे पर दस्तक दी है। एक चौहत्तर वर्ष के निहत्थे सिपाही ने अपना लोहा मनवाया है। अपने अनशन से जनलोकपाल का मार्ग प्रशस्त किया है। देश की जनता खुश है। महँगाई सातवें आसमान पर है, आसमानी और सुलतानी कहर लगातार बरप रहा है। कहीं अवर्षण तो कहीं अतिवर्षण से किसानों की सालभर की मेहनत बेकार हो गयी है। सरकारी, सहकारी तथा महाजनी ऋण लेकर बीज-खाद का जुगाड़ किया गया था। अब खेती की फसलें तो तबाह हो गयीं। सर पर मूल और सूद का बोझ बढ़ गया है। लेकिन किसान खुश है... जनलोकपाल आ रहा है! युवा लोग...जो पढ़ रहे हैं, स्कूल-कॉलेजों के दाखिले के लिए दर-दर घूम रहे हैं। शिक्षा संस्थानों का शुल्क दिन दूना-रात चौगुना बढ़ रहा है। माँ-बाप की जिन्दगीभर की कमाई बच्चों की प्राइमरी शिक्षा में ही खत्म हो रही है। अध्यापक अध्यापन के अतिरिक्त राष्ट्रीय कार्यों में संलग्न हैं। जन-गणना, परिवार नियोजन, ग्राम-सभा से संसद तक के इलेक्शन, वोटर सूची बनाना, वोटिंग बूथ पर मतदान अधिकारी से लेकर चपरासी तक का कार्य करना, नेताओं-अफसरों तथा शिक्षा-महकमों के कार्यक्रमों में छात्रों के साथ पहुँचना, राष्ट्रीय नेताओं की जयंती-पुण्यतिथियों के समारोहों का आयोजन करना, अपने ऊपरी अफसरों को खुश रखने के लिए नियत मार्गों को अपनाना आदि कार्यों से जो समय बच जाये उसमें बच्चों के लिए खिचड़ी पकाना और इन सब के बाद बचे हुए समय में बच्चों को पढ़ाना...लेकिन वे भी खुश हैं...जनलोकपाल आ रहा है!

जैसे-तैसे पढ़ाई पूरा करने के बाद विश्वविद्यालयों से बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ पाकर, युवक नौकरी की तलाश में निकल रहे हैं। बाजार में कई नौकरियाँ हैं... नौकरियों का बाजार लगा हुआ है...मुक्त बाजार...मुक्त अर्थनीति! प्राइमरी मास्टरी से लेकर विश्वविद्यालयीन प्रोफेसरी बाजार में रखी गयी है। हर दिन बोली लगती

है...नौकरियाँ नीलाम हो रही हैं...प्राइमरी मास्टरी दस लाख...दस लाख एक, दस लाख दो...दस लाख तीन। दस लाख में मास्टरी खरीद कर आराम से जिन्दगी कट जायेगी...कई मास्टरियों...कई प्रोफेसरियों का स्टाक शिक्षा संस्थानों के मॉल में भरा पड़ा है...शिक्षा के दुकानदार खुश हैं! जिनके पास क्रय शक्ति नहीं ऐसे करोड़ों डिग्रीधारी दर-दर घूम रहे हैं। नौकरी की उम्मीद में अधेड़ हो गये हैं, आज वे भी खुश हैं–जनलोकपाल आ रहा है।

आम आदमी आम जरूरतों के लिए भी परेशान है। मकान तो छोड़िये रोटी और कपड़े के लिए भी मोहताज है। रोटियाँ और खानेवाले मुखों के गणित में खोया हुआ है। बिजली-पानी की चिन्ता अलग से है। भूखे पेट राह चलते हुए भी वह पुलिसवालों से डरता है। राशन कार्ड से लेकर अपनी जाति के सर्टिफिकेट के लिए अपनी एक महीने की मजदूरी साहब की भेंट चढ़ाने के लिए मजबूर है। घर में बिजली नहीं, घर के बाहर सड़क नहीं, गाँव में दवाखाना नहीं, दवाखाना हो तो उसमें न डॉक्टर हैं और न दवा...चार दर्जे का स्कूल है लेकिन उसमें मास्टर नहीं...ग्राम सभा है लेकिन गँवारों की कोई सुनवाई नहीं...जिन्दगी एक अन्तहीन तकलीफों का सिलसिला बन गयी है, लेकिन वह आज खुश है–जनलोकपाल आ रहा है।

मध्य तथा उच्च मध्यवर्गीय नौकरीपेशा शहराती जनता महँगाई और कई तरह की नागरी असुविधाओं से परेशान है। रसोई गैस, पेट्रोल से लेकर फ्लैट-बँगलों की कीमतें आसमान छू रही हैं। लोड शेडिंग के नाम पर घण्टों बिजली गुल रहती है। साग-सब्जी घर का बजट बिगाड़ रहे हैं। उस पर इन्कम टैक्स, सर्विस टैक्स...अलाँ टैक्स...फलाँ टैक्स...एक तारीख की तनखाह दस तारीख तक फुर्र हो जाती है...दस से तीस तारीख तक मुँह लटकाने वाला यह वर्ग भी आज खुश है–जनलोकपाल आ रहा है।

सब खुश हैं। व्यापारी खुश हैं, बनिये-बिचौलिये खुश हैं...बुद्धिजीवी-चिन्तक-साइंसदां खुश हैं...चपरासी खुश हैं...बाबू खुश हैं...साहब भी खुश हैं...सत्तापक्ष नेता खुश हैं, और विपक्ष के नेता भी खुश हैं...जनलोकपाल आ रहा हैं! यदा... यदा हि धर्मस्य...!

समृद्धि के उस विशाल पर्वत पर विराजमान द्यौपिता...अनाम...अरूप... निर्गुण...निराकार...सर्वव्यापी...संजीवन भ्रष्टाचार मन्द-मन्द मुस्कुरा रहा है– जनलोकपाल आ रहा है!

वेटिंग फॉर गोदो! गोदों के इन्तजार में!

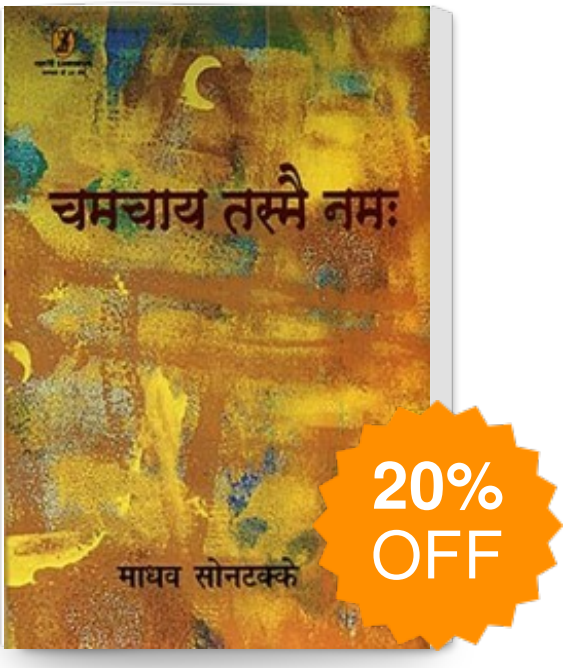

Publisher : Vani Prakashan ISBN : 9789350728482 Author : Madhav Sontakke

Type the URL : http://www.kopykitab.com/product/9194

Get this eBook